

अवस्था या भाव 3. युक्त होने का भाव 4. रक्षित होने की अवस्था या भाव 5. दमन किये जाने की अवस्था या भाव 6. विगलित 7. धीमा होने या करने की अवस्था/भाव।

संवृत्त वि. (तत्.) 1. पहुँचा हुआ, प्राप्त 2. घटित, व्यतीत 3. उद्देश्य या विचार जो पूरा सिद्ध हो चुका हो 4. उत्पन्न 5. उपस्थित, मौजूद 6. वरुण देवता 7. ढका हुआ, आच्छादित।

संवेग पुं. (तत्.) 1. उत्तेजना, क्षोभ, मन की खलबली, मनोवेग 2. आवेग, उतावली, डर, भय 3. प्रचंडता, तीव्रता 4. गहरा भाव, तीव्र मनोवेग **मनो.** मनोवैज्ञानिक कारणों से प्राणी के मन और शरीर की अत्यधिक उत्तेजित अवस्था जो उसकी चेतना, अनुभूति एवं व्यवहार में क्षोभ उत्पन्न कर देती है।

संवेगाम वि. (तत्.) जो उत्तेजना, आवेग, भय, प्रचंडता, क्षोभ **जैसे-** प्रतीति कराये या इनके जैसा हो।

संवेदन पुं. (तत्.) 1. मन में सुख दुखादि की होने वाली अनुभूति या प्रतीति 2. ज्ञानेन्द्रियों द्वारा दृश्य, स्पर्श आदि के कारण शरीर के अंगों या स्नायुओं में प्राकृतिक रूप से होने वाला स्पन्दन जिससे मस्तिष्क को उसकी अनुभूति होती है 3. किसी को किसी बात का ज्ञान कराना, बोध कराना 4. नक छिकनी नाम की घास जिसे सूँघते ही छीकें आने लगती हैं।

संवेदन-मंदता स्त्री. (तत्.) संवेदन तंत्र अथवा संवेदन अंग में संवेदना अनुभूति की कमी, या संवेदना अनुभूति को अच्छी तरह से प्रकट न कर पाना।

संवेदनालय पुं. (तत्.) 1. संवेदन तंत्र, संवेदन क्षेत्र, संवेदना वाला स्थान या अंग **जैसे-** मस्तिष्क या उसका कोई भाग 2. संवेदनाओं पर क्रिया, प्रतिक्रिया करने वाला मस्तिष्क का भाग 3. संवेदन तंत्र **जैसे-** तंत्रिका तंत्र, नाड़ियाँ आदि।

संवेदनाहरण वि. (तत्.) 1. संज्ञा शून्य या बेहोश करने की क्रिया या भाव 2. रोगी को बेहोश

करने की दवा देकर उसके अंग की पीड़ा कुछ समय के लिए अनुभव न होने देने की स्थिति पैदा करना, शल्य चिकित्सा में किसी अंग के छेदन आदि के लिए संवेदनाहरण दवा देकर उसे सुन्न किया जाता है। *anesthesia*

संवेद्य वि. (तत्.) 1. जो जानने, ज्ञान के योग्य हो, जिसकी अनुभूति या ज्ञान हो सकता हो, संवेदनीय 2. इन्द्रियग्राही, अनुभवगम्य।

संवेद्यता स्त्री. (तत्.) संवेद्य होने की अवस्था, भाव या गुण इन्द्रियग्राह्यता, अनुभवगम्यता।

संवेधित्र पुं. (तत्.) छेद या सुराख करने का यंत्र।

संवेश पुं. (तत्.) 1. समीप आना, पहुँचना, प्रवेश करना 2. भेंट, मिलन 3. आसन लगाना, बैठना 4. लेटना, सोना 5. बैठने का आसन या पीढ़ा 6. कामशास्त्र में एक प्रकार का रति-बन्ध 7. अग्नि-देव जो रति के अधिष्ठाता है।

संवेशक वि. (तत्.) चीजें क्रम से तथा यथा-स्थान रखने वाला व्यक्ति।

संवेशन पुं. (तत्.) 1. बैठना, लेटना, सोना 2. घुसना, पैठ करना, घुसाना 3. मैथुन, रति।

संवेशी वि. (तत्.) संवेशक।

संवेश्य वि. (तत्.) 1. जिस पर बैठा या लेटा जा सके 2. जिसके अंदर घुसा या प्रवेश किया जा सके।

संवेष्ट पुं. (तत्.) लपेटने का कपड़ा, सम्बेष्टन, बैठना।

संवेष्टक पुं. (तत्.) जो वस्तुओं का संवेष्टन करता हो, गठरी बांधने वाला, पैकिंग करने वाला, पैकर।

संवेष्टन पुं. (तत्.) 1. किसी वस्तु को चारों तरफ से अच्छी तरह लपेट कर बांधना 2. बांधने/ लपेटने का सामान **जैसे-** कपड़ा, कागज, टाट, आदि जिनसे भेजा जाने वाला सामान लपेटा जाता है 3. चारों ओर से घेरना, बंद करना।

संवेष्टित वि. (तत्.) चारों ओर से लपेटा, बांधा गया, परिवेष्टित।